कला बाजार और मुखौटे

डॉ.ऋतुराज वषिश्ठ

प्रसिद्ध रंगकर्मी माइकेल मेस्चेक कहते है कि –"मेरे विचार में यह आवष्यक है कि हम थिएटर आर्टिस्ट का मुख्याधार मुखौटा अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम है । रंगमंच अभिनेता के द्वारा नर्तक, कठपुतली, माइम्स्, विदूशक एवं अन्य प्रदर्षन कारी रूप"[1]

प्राचीन काल से ही मुखौटे का प्रयोग अपने पूर्वजों की स्मृति हेतु या षिकार, सिर ढकने, आत्माओं का आव्हान् करने, बुरी आत्माओं को दूर करने हेतु घर, या घर के बाहर लगाये जाते थे। प्राचीन काल के मुखौटे षायद इस प्रकार की वस्तुओं के बने रहे होंगे जो कम समय तक टिकाऊ रही। इसी कारण उनके ध्वंसावषेश हमें बहुत कम ही दिखाई देते हैं। कुछ ही मुखौटे जो स्थाई माध्यम यथा पत्थर, धातु, लकड़ी या मिट्टी को पकाकर बनाये गये हैं वर्तमान में अवषेश के रूप में दिखाई देते हैं। कुछ मुखौटे तात्कालिक वस्तुओं यथा चमड़ा, पंख, बाल, हड्डी या अन्य जैविक रूप से छरण योग्य माध्यमों आदि के रहे होंगे जिससे वह दीर्घकालिक समय तक अपना आस्तित्व बनाये नहीं रख सके।

भारतीय परिवेष में मुखौटों का प्रयोग जनजातीय संस्कृति में से कुछ जनजातियों में ही उपयोग होता रहा है, जो कि सम्भवतः अलंकरण की दृश्टि से अथवा षिल्पगत सौन्दर्य के लिए उपयोग किये जाते थे। आदि मानव ने मुखौटों का निर्माण सम्भवतः अपने स्वत्व को संतुश्ट करने, अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रकट करने या अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए किया हो,किन्तु आज उन्हीं अनगढ़ सरल सहज एवं भावों से परिपूर्ण मुखौटै, चाहें व जानवर के हों, किसी व्यक्ति के, भूतप्रेतों के, जादुई चमत्कारों का प्रतिनिधित्व करते व्यक्तित्वों के या किसी अमूर्त चरित्र के यह सभी समाज के सामने व्यापक रूप से आ रहे हैं।

मुखौटे उत्तेजक,अचम्भित करने वाले या किसी भ्रम में डालने वाले हो सकते हैं। उनकी सामग्री माध्यम आदि काल मानव के लिए मुखौटों की आवष्यकता एवं प्रासंगिकता जितनी महत्वपूर्ण थी आधुनिक काल में मुखौटे उससे ज्यादा प्रासंगिक एवं बहुआयामी उद्देष्यों की पूर्ति करने में सक्षम हो गये हैं। अब इसका उद्देष्य मात्र मनोरंजन अथवा आचरण न होकर विद्रोह एवं सजावट की भाशा का प्रतीक बनता जा रहा है इंडिया टुडे में छपी रिपोर्ट के अनुसार – "ओसामा बिन लादेन के मुखौटे मलेषिया, पाकिस्तान आदि देषों के युवको द्वारा भारी मात्रा खरीद कर पहने जा रहे हैं।"[2]

प्राचीन समय में मुखौटों की उपयोगिता रक्षा, बचाव, भय, क्रोध, ड़र, प्रेम आदि की अभिव्यक्ति करने की रही होगी। षनैःषनेः मानव बुद्धिमान एवं समझदार बनता गया उसने मुखौटों की उपयोगिता का दायरा बढ़ाया और उसने जरूरत के अनुसार उसका उपयोग किया जैसे युद्ध में कवच के लिए, सौन्दर्य के प्रतीकों, देवी देवताओं के स्वरूपों, बुरी आत्माओं, कथानकों, अपने स्वप्नों एवं दुःस्वप्नों को उजागर करने के लिए।

आधुनिक युग में मानव ने इसी क्रम को जारी रखा एवं इसको एक नयी दिषा दी इसका उपयोग सामान्य

AIRO JOURNALS

व्यक्ति से इतर कुछ प्रभावषाली व्यक्तियों के बीच ऐष्वर्य और समृद्धि के प्रतीकों के रूप में किया जाने लगा सजावट का दायरा भी बढ़ा लोगों में महंगी कलाकृतियों जैसे आधुनिक युग के जैसे कि पिकासो, ड़ाली,वैगॉग,हुसैन तैयव मेहता आदि आधुनिक कला के चित्रों के साथ–साथ मुखौटों को भी स्थान दिया जाने लगा। जहां एक ओर आम आदमी महान कलाकारों के द्वारा निर्मित चित्रों की प्रतिकृतियां ही घर पर लगाते हैं,वहीं दूसरी ओर मुखौटे भी आजकल इसमें एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते दिखाई देते है। सामान्य रूप से आजकल विभिन्न तरह के कार्टून पात्रों से लेकर राजनीतिक पात्र या कलात्मक अभिव्यक्ति के मुखौटे या तो एकल स्वरूप अथवा दो या इससे अधिक संख्या में नजर आते है। जिन्हें या तो दीवारों अथवा दरवाजों पर लगाकर दर्षक की दृश्टि को केन्द्रित किया जा सके।

आधुनिक काल में मुखौटा उससे अधिक प्रासंगिक एवं बहुआयामी उद्देष्यों की पूर्ति करने में सक्षम है । वह स्वरूप, देष, काल, स्थान से बढ+कर सार्वदेषिक, सार्वकालिक एवं सर्वमान्य हो गया है । मुखौटा व्यश्टि का रूप होते हुए अथवा यह कहना उचित होगा कि मुखौटा व्यक्तिगत प्रयोग से हटकर समूहगत होता जा रहा है । उसका उद्देष्य मात्र मनोरञ्जन अथवा आवरण न होकर विद्रोह की भाशा का प्रतीक बनता जा रहा है ।

कुछ मुखौटों को मूर्तिषिल्प की तरह प्रयोग में लाकर घरों में ऑफिसों के कोनों को या व्यवसायिक जगहों पर अलंकृत किया जाता है, वहीं दूसरी ओर कला के क्षेत्र में रंगमंच, मनोरंजन, प्रचार या प्रदर्षन के रूप में या सिनेमा, वैले फिल्म के किरदार आदि में भी प्रयोग में लाये जाते हैं। प्रसिद्ध फिल्मकार चन्द्रप्रकाष द्विवेदी के अनुसार "फिल्म में मुखौटा व्यक्ति के आन्तरिक पक्ष की अपेक्षा बाह्य पक्ष के दर्षन पर अधिक आग्रह करता है – मुखौटा जीवन के दो पक्षों को अभिव्यक्त करता है वह अच्छाई और बुराई के द्वन्द को दर्षाता है।"[3]

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

मनोरंजन के तौर पर लगाये जाने वाले विभिन्न रोचक या महत्वपूर्ण पात्रों के मुखौटे जैसे मिकी माउस, स्पाइड़रमैन, ड्रेकुला आदि का मुखौटा भी प्रचार हेतु प्रयोग में लाये जाते है। "बालक, बालिका में संस्कार डालने के लिए इस प्रकार की कथाओं के माध्यम से षिक्षा जगत में आमूल चूल परिवर्तन किया जा सकता है कठिन से कठिन विशय समझाया जा सकता है।"[4] इसी प्रकार से किसी संस्था, व्यक्ति, किसी नीति आदि का विरोध प्रदर्षन करने के लिए भी मुखौटे पहनकर विरोध किया जाता है। इस तरह से हम यह महसूस करते हैं कि कला बाजार में मुखौटे धीरे–धीरे अपनी हिस्सेदारी की आहट दे रहे हैं। चाहे वह किसी भी माध्यम से हों या किसी भी विधा से हों कला का अनिवार्य हिस्सा बनते जा रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- मेस्चेक, माइकल, मास्क एट ए ग्लान्सेस, (लेख) आर्यन बुक इंटरनेषनल, नई दिल्ली, 2000] पृश्ठ 246

2- चावला, प्रभु, इण्डिया टुडे, वर्ष 15] अंक 43] लिविंग मीडिया इण्डिया लिमिटेड, कनाट प्लेस, नई दिल्ली, नवम्बर 2001] पृश्ठ 2] 38

3- द्विवेदी, चन्द्र प्रकाष] प्रसिद्ध चाणक्य के निर्देषक खजुराहो फिल्म के निर्माता साक्षात्कार, दैनिक भास्कर (समाचार पत्र), दिनांक – 15 दिसम्बर 1999

4- ब्रेख्त बटोल्र्ड, ब्रेख्त आन थियेटर, पुनः प्रकाषन, राधा कृश्.ा प्रकाषन, नई दिल्ली, 1981 पृश्ठ 163

IRO JOURNALS